अथवा

ज़रा अपने पहाड़ से उतर के नीचे तो देखो। उतरो उनके बीच अपने आँख-कान खोल के और उनकी तरह बोल के देखो, क्या होता है! बात तुम बेशक अपनी ही करो। पर ऐसी ज़ुबान में तो करो जो उनकी सबकी अपनी ज़ुबान हो, उनकी सबकी समझ में आए। कालीदास ही बनना है तो वह भी बनो। मगर कभी तुलसीदास बन के भी दिखाओ। बारी-बारी से दोनों ड्यूटी निभाओ। क्या ये भी तुम्हारी ड्यूटी नहीं है?

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (2×7=14)

(क) रेखाचित्र विधा की विशेषताएँ

(ख) डायरी साहित्य: उद्‌भव और विकास

(ग) 'बिदापत नाच' का प्रतिपाद्य

(घ) पत्र-साहित्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1095 **L**

Unique Paper Code : 2052103603

Name of the Paper : Kathetar Gadya Sahitya

Name of the Course : **DSC**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. कथेतर गद्य साहित्य की विशेषताएँ लिंखते हुए उसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य और कथा साहित्य में अतर स्पष्ट कीजिए। (15)

2. कथेतर गद्य साहित्य के उद्‌भव और विकास का वर्णन कीजिए।

अथवा

रिपोर्ताज विधा की विशेषताएँ बताते हुए उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'आवारा मसीहा' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए शरतचन्द्र के व्यक्तित्त्त का उल्लेख कीजिए।

अथवा

अजेय के रेखाचित्र राष्ट्र कवि: मैथिलीशरण गुप्त' के आधार पर गुप्तजी की विशेषताओं को लिंखिए। (15)

4. निराला के पत्र साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-साहित्यिक परिवेश का परिचय दीजिए।

अथवा

'अकेला मेला' में अभिव्यक्त साहित्यिक विचारों का वर्णन कीजिए। (15)

5. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (2×8=16)

(क) ऐसे ही एक उक्ति अहेर में मेरे हाथ ऐसी पूंछ आ गई जिसकी वास्तविक जानकारी मेरे ज्ञान जगत की सीमा में नहीं थी अवश्य ही यह समस्या पंडित जी की दृष्टि बचाकर ऐसी समस्याओं के बाड़े में प्रवेश पा गई जो मेरे लिए ही सुरक्षित थी, क्योंकि

साधारणतरू पण्डित जी अनुभव की सीमा का ध्यान रखते थे। बचपन में जिज्ञासा इतनी तीव्र होती है बिना कार्य कारण स्पष्ट किए एक पग बढ़ाना भी कठिन हो जाता है। बादल पानी बिना बरसाए हुए रह सकते हैं परंतु पानी तो उनके बिना बरस नहीं सकता।

अथवा

"नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है" आदि से हिन्दी काव्य से और देशभूमि से परिचय हुआ; फिर जयद्रथ-वध अथवा पंचवटी के माध्यम से भारतीय वाङ्मय और परंपरा के आकर-पग्रन्थों से परिचय पाया। इतना सब तो पुस्तकें पढ़ने के अभ्यास से पहले ही हो गया था क्योंकि एक तो मेरे शिक्षा-दीक्षा भी पुराने ढंग से आरंभ हुई थी जिसमें पटिया और लेखनी का काम तो होता था लेकिन पुस्तकों का विशेषा प्रयोजन नहीं होता था-पुस्तक का काम स्मृति ही देती थी।

(ख) वे हृदय जीतने में विश्वास रखते थे। यह नहीं देखना चाहते थे की जीतने वाला हीं हीन जातीय है या विजातीय, विधर्मी-विदेशी है या कुमार्गी-कुचाली। जो हृदय जीतने का महान कार्य कर सकता है वह कुमार्गी-कुचाली हो ही नहीं सकता, और यह भी कि जो वास्तविक जीवन को देखना चाहता है वह शुचिता-अशुचिता के चक्कर में नहीं पड़ता। इसी अभिज्ञता के कारण गोर्की, ताल्स्ताय और शैक्सपियर शुचिता के चक्कर में नहीं पड़े।